

अं लो मे वसिह रुगो युद्ध का वृषे कर्कटे तो लि के श्वे  
५ तु मे न पु म्नि पु पी न अ ल क्ष्मी नृ मे कुं भ के पाश शी  
मृ न्युः ॥ ४ ॥ व ड म या व र्मा ॥ म ल के पं च ॥ ५ ॥  
पु क्षी त्रि ता ॥ के र यो अ त थै कै क वा रु द्रो म्भ रू प  
ह स यो र द या दे कं च ह द य स्य तं ॥ ना भो वो ड र मा डी स्थ मु  
शे त्र यो व र ॥ त्रि के त्रि क त था जा न्यो पा द यो अ त्रि के त्रि  
म स के धार्य रु ने मु खे च पि नृ या त क ॥ र्के व र्के च र वा ला  
नु ज यो रा स स प नि ॥ वा मे क रे व म ह न्या द क्षि रे मा नृ या त क  
ह द ये रा ज्य ता मं च य यं ना भो न जी वे ति ॥ पु ह्ये च य वि ता स  
च वृ षा व स्या सु खी भ त्वे त् ॥ वा म जा नो भ वे न्य नृ द क्षि रा च  
म हा ॥ आ पु श्री नो म पा दे स्या इ क्षि रे न्या पु  
इ पु नृ ॥ अ नृ मूल जा न स्य ल स र्गा ॥ ॥



ये वे जे आ आ मा आ का मा पे मा फ  
 3 0 14 14 3 2 14 0 11 9 30  
 14 10 12

श्रीगणेशायनमः॥ घञीन्द्रो नितशक ईश हृत्फलं स्य  
 चरं विहृत शेषकं तु युक्तं॥ वैत्राघेः पृथगमुतः स  
 चक्रादिगुक्ता मरफला धिमासयुक्तं॥ ॥ खत्रिघ्नगतः  
 तिथियुगिरग्रचक्रांशाद्यं पृथगमुतो विषकलवेः  
 रुनाहेर्वियुतमहर्गणे भवेद्देवस्पादरहतचक्रयुग  
 णे जात॥ ॥

श्रीगणेशायनमः॥ ॥ घञीन्द्रो नितशक ईश  
 हृत्फलं स्य चक्रा चरं विहृत शेषकं तु युक्तं॥ वैत्रा  
 घेः पृथगमुतः स चक्रादिगुक्ता मरफला  
 धिमासयुक्तं॥ ॥ खत्रिघ्नगततिथियुगिरग्रच  
 क्रांशाद्यं पृथगमुतो विषकलवेः॥ रुनाहे  
 र्वियुतमहर्गणे भवेद्देवस्पादरहतच  
 क्रयुगणो जात॥







श्रीव पत्रिका ॥ नत्कलानि ॥ तृतीया त्रयोदशी स्वक फलं ॥ तदेव चतुर्थी च

| मे | मा | फ  | से | वे | जे | आ  | श्रा | भा | आ  | का | मा |   |
|----|----|----|----|----|----|----|------|----|----|----|----|---|
| २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९    | १० | ११ | १२ | १  | १ |
| ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १०   | ११ | १२ | १  | २  | १ |
| ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११   | १२ | १  | २  | ३  | १ |
| ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ | १२   | १  | २  | ३  | ४  | १ |
| ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ | १२ | १    | २  | ३  | ४  | ५  | १ |
| ७  | ८  | ९  | १० | ११ | १२ | १  | २    | ३  | ४  | ५  | ६  | १ |
| ८  | ९  | १० | ११ | १२ | १  | २  | ३    | ४  | ५  | ६  | ७  | १ |
| ९  | १० | ११ | १२ | १  | २  | ३  | ४    | ५  | ६  | ७  | ८  | १ |
| १० | ११ | १२ | १  | २  | ३  | ४  | ५    | ६  | ७  | ८  | ९  | १ |
| ११ | १२ | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६    | ७  | ८  | ९  | १० | १ |
| १२ | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७    | ८  | ९  | १० | ११ | १ |

करव पास्यति ॥  
कल होम विषयि ॥  
अर्थ लाभो भवति ॥  
कलेह प्राप्स्यति ॥  
द्वय प्राप्स्यति ॥  
कोलाहल भवति ॥  
श्रीसोभाग्यं प्राप्ति ॥  
धनं लभति ॥  
श्रीसोभाग्यं प्राप्ति ॥  
मार्गं मृत्युं प्राप्स्यति ॥  
पथिषु निधनं प्राप्ति ॥

विष्णु लं सं प्रंसवित सुत घटं न भगति न कालं सं गं योगिनि मूह तं न व

उरं वि॥ पंचमी पराभिमाष श्री अ मा ता त्या र्क फलं ॥

| ह  | व  | ल  | भ  | ति |    |
|----|----|----|----|----|----|
| १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  |
| २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  |
| ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  |
| ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  |
| ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
| ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ |
| ७  | ८  | ९  | १० | ११ | १२ |
| ८  | ९  | १० | ११ | १२ | १  |
| ९  | १० | ११ | १२ | १  | २  |
| १० | ११ | १२ | १  | २  | ३  |
| ११ | १२ | १  | २  | ३  | ४  |
| १२ | १  | २  | ३  | ४  | ५  |

रूपं प्राप्स्यति ॥  
रूपं प्राप्स्यति ॥  
शुभं भवति ॥  
मार्गं मृत्युं प्राप्ति ॥  
पथिषु मृत्युं प्राप्ति ॥  
अर्थ लाभं भवति ॥  
उपद्रवं भवति ॥  
अर्थ लाभं भवति ॥  
धनं लभति ॥  
कलेह प्राप्स्यति ॥  
श्रीसोभाग्यं भवति ॥  
धनं लाभो भवति ॥

रणं ॥ नराहुं होरादी न शुभं शुभं तो या तिस तं महेशो न

३-रूपं भवति  
विनाशं भवति  
विनाशं प्राप्स्यति  
शुभं फलं न प्राप्ति  
सुखं प्राप्स्यति ॥  
शुभं न भवति  
किंचिन्निधिं प्राप्ति  
सुखं भविष्यति  
आनंदं लभति  
आनंदं भवति  
यथागतं तथा गच्छति



मैत्रेयचिह्नपदाचिह्नचद्वयेचिह्नचद्वयविता॥ मिथु  
नेगर्भचिह्नचकर्कटेचविभारिका॥ सिंहचैश्वर्य  
चिह्नचकन्याचिह्नचपराङ्मण॥ तुल्येयापारचि  
ह्नचवृश्चिकेविग्रहोभवेत्॥ धनुषोधनुचिह्नच  
मकरेचचलाचलम्॥ कुम्भेचैजलचिह्नचमी  
नेचमेदिनीभवेत्॥ ॥ अतिवारगतेजीवे  
वक्रगेश्वरशनेश्वरे॥ राजपुत्रसहस्राणाम्येव  
क्तम्बसुधरा॥

रवेः सप्तसहस्राणि चन्द्रस्यैकादशे वतु॥ कजे दशस  
हस्राणि बुधे चतुः सहस्रकं॥ एकोविंशति जीवे  
चः शुक्रे षोडशकं तथा॥ त्रयोविंशति मन्दे चरा  
हो रस्य दशे वतु॥ केतोः सप्तदशैव ग्रहाणां जप  
संख्ये केति ब्रह्मयामले॥

|    |    |     |    |    |      |     |    |
|----|----|-----|----|----|------|-----|----|
| अ  | म  | क   | र  | ह  | आ    | उ   | नि |
| अ  | ग  | छ   | स  | स  | वा   | वि  | श  |
| ३  | ३  | ६   | ५  | ३  | २    | ४   | ३  |
| अ  | शो | क्ष | श  | न  | म    | ह   | श  |
| अ  | नि | र   | क  | मु | णि   | ह   | र  |
| अ  | म  | पू  | उ  | ह  | वि   | ल   | दि |
| ५  | ५  | २   | २  | ५  | १    | ९   | ४  |
| च  | ह  | शा  | शा | ह  | मी   | व   | ना |
| के | गो | ह   | या | उ  | अ    | प्र | रा |
| अ  | म  | अ   | म  | ज  | न    | म   | सि |
| ४  | ३  | १   | २  | ३  | ३    | ३   | ४  |
| व  | कु | सि  | ग  | म  | त्रि | म   | म  |
| वि | ड  | ह   | ज  | च  | का   | र   | द  |
| श  | पू | ०   | १  | १  | १    | १   | १  |
| म  | सि | गो  | ग  | १  | १    | १   | १  |
| १० | २  | २   | २  | २  | २    | २   | २  |
| व  | म  | य   | म  | म  | म    | म   | म  |
| व  | क  | ल   | ल  | ल  | ल    | ल   | ल  |



पितृजनकतदोषोदाहृतः ॥ १ ॥ कृष्णस्य च रवमनशिरो  
 त्रिमेखलनें गपीडा ॥ द्विजकृतभुजभोज्यं तर्पणं पिण्डा  
 नं जलघटदिनमेकं पिण्डं पूजनीयं ॥ २ ॥ वृषे गेने दोष  
 ज्वरं तापं तृष्णावलं निर्वलं कर्णनेत्रांगपीडा ॥ कृत  
 गकिपाठे च नैवेद्यदानं कृतं क्षीरहोमादिकं रोगना  
 शी ॥ ३ ॥ महाभाष्यायुग्मके प्रक्षालने त्रिदोषना  
 था वांगभोगभ्रमे च ॥ पठेत्स्थापितं पूजयेत्तैलपि  
 डं शतं चाहुतिर्गुगुलैरक्तपुष्पैः ॥ ४ ॥ कर्कोदये शा  
 किनिदोषमुग्मजीर्णावातामयशीर्षपीडा ॥ नि  
 वेद्यदानं पयसार्धसर्करैरन्नप्रदीपैः खलु दोष  
 नाशः ॥ ५ ॥ सिंहोदये प्रेतकृतांगदोषोज्वरप्रतापो  
 ज्यमनातिरक्तः ॥ दमे कृतं पुत्रलिका विधानं प्रेन  
 क्रिया पूजनविप्रभोज्यं ॥ ६ ॥ कन्यावेलगने कृतं क

र्मदोषोज्वरप्रतापो भ्रमतापदाहः ॥ ७ ॥ षडंगजाप्यश्च  
 दशं शोमकृत्वा भिषे केवलु दोषनाशः ॥ ८ ॥ तु  
 लेक्षत्रपालैः कृतो दोष उद्योज्वरो दोगधूलोदर  
 पीडनश्च ॥ घृते रक्तपुष्पैश्च सिंहैरपुक्तैश्च जैः  
 श्वदानार्चितैरक्षपालैः ॥ ९ ॥ बेतालदोषकृतवृषि  
 के कज्वरप्रतापो भ्रमनेत्रपीडा ॥ तस्मै विधाने क  
 रवीरगुगुलैः शताहुतिश्चाष्टयुतैः सुखं स्यात् ॥  
 १० ॥ धनुर्द्वरे लग्नगते नदीनां समीपं संचारक  
 प्रेतदोषः ॥ निसौ सुमिश्रं दधियुक्तमन्नं दद्यात्त्रि  
 शायां शरवर्तिकायुतम् ॥ ११ ॥ न के लग्ने नागतोषा  
 तदोषोदाहो नानासर्पसा दृश्यं केचेत् ॥ आपस्वा  
 पी स्वप्नं दृश्यते च दुर्घा पुक्तं दुग्धका पासदानं



कुंभे विलग्ने स्वगृहस्थ नागेषु पीडितं पूर्वभवे  
 दुरोच ॥ यथाग्निना दारुणा दारुकांसमं तं हूल  
 तैले लवणं च दानं ॥ ११ ॥ मीने विलग्ने स्वकुल  
 स्थदेव प्रकोपतो हृज्ज रुजं च विभ्रमं ॥ नाना  
 विवादं सुजनेः सु मित्रैस्तस्यैव पूजां समखा  
 प्रकुर्वीत ॥ इति दोष जानम् ॥

यात्र श्रेष्ठः श्रुतिनीधः अनुपुतिः हरेः श्रेष्ठः  
यात्रामध्यः ज्येष्ठः गीः उ३ प३ दि३ वा३ स्वा३ मू३  
यात्राधमाः आर्द्राः चिः श्रेष्ठः मद्याः भ३ क३  
य३ दि३ न३ प३ स३ र३ स३ उ३ त्रमाः श्रुतिनिर्दिता

|    |    |    |    |     |                  |
|----|----|----|----|-----|------------------|
| १  | ११ | १६ | २२ | १२  | रक्तवस्त्रदानम्  |
| २  | १० | ७  | १५ | २५  | वस्त्रदानम्      |
| ३  | १० | ४५ | १० | ०   | स्वितवस्त्रदानम् |
| ४  | २१ | ५४ | ३६ | ३६० | पवालदानम्        |
| ५  | २१ | २६ | १६ | ३५  | इन्धदानम्        |
| ६  | ८  | ०  | १५ | १५  | स्वितवस्त्रदानम् |
| ७  | ५  | ७  | १५ | ८   | रक्तवस्त्रदानम्  |
| ८  | १५ | ३० | १५ | ५   | पीतवस्त्रदानम्   |
| ९  | १३ | ३३ | ११ | ०   | कपिलवस्त्रदानम्  |
| १० | १० | ४५ | १२ | २२  | नीलवस्त्रदानम्   |
| ११ | ०  | ८  | २८ | ०   | काञ्चनदानम्      |
| १२ | ४  | २५ | ०  | १५  | स्वितवस्त्रदानम् |
| १३ | २  | ११ | १६ | २६  | सुवर्णदानम्      |
| १४ | ०  | ०  | ०  | ०   | पीतवस्त्रदानम्   |
| १५ | ६० | ११ | ८  | ३०  | शेषदानम्         |
| ३० | ३० | १८ | १५ | २०  | अम्बलदानम्       |



अथादिन्यादिसप्तवारेषु रोगोत्पत्तौ रोगमु  
क्तदिनावधि र्यामक्रमेण स्यात् ॥

|      |    |    |    |    |                  |
|------|----|----|----|----|------------------|
| ० सु | १० | १  | ९  | ५  | रक्तवस्त्रदानम्  |
| चं   | ३  | १३ | २० | १६ | स्वितवस्त्रदानम् |
| ० मं | ५  | १२ | १९ | ३० | ताम्रगुडदानम्    |
| व    | ४  | ६  | ८  | १० | पीतवस्त्रदानम्   |
| हृ   | १  | ४  | १० | २० | हिरण्यदानम्      |
| शु   | ६९ | १६ | ५  | ९  | स्वितवस्त्रदानम् |
| ० श  | ३० | १९ | १५ | २० | कृष्णवस्त्रदानम् |

|      |    |    |    |    |                  |       |    |    |    |          |                  |
|------|----|----|----|----|------------------|-------|----|----|----|----------|------------------|
| अ    | ९  | १३ | १२ | ३  | घृतदानम्         | स्ता० | २२ | २४ | १४ | रजतदानम् |                  |
| ० न  | ११ | २४ | २७ | २७ | कृष्णवस्त्रदानम् | वि०   | ५  | १६ | २६ | २४       | शुक्लवस्त्रदानम् |
| ० क  | ९  | ८  | १४ | १४ | घृतदानम्         | अ०    | ०  | २६ | २४ | २०       | पद्मवस्त्रदानम्  |
| रो   | ७  | २० | १४ | २७ | दुग्धदानम्       | जो०   | ०  | १४ | ३८ | १४       | अरुणवस्त्रदानम्  |
| सु   | १० | १४ | २४ | २४ | लोप्यदानम्       | मू०   | २० | १५ | १६ | ७        | तिलमाषदानम्      |
| ० आ  | ०  | २७ | २० | २२ | स्वितवस्त्रदानम् | पू०   | ११ | ३८ | १९ | १४       | भूमिदानम्        |
| उ    | ०  | ५  | ३२ | ३६ | पीतवस्त्रदानम्   | उ०    | १५ | १० | २२ | ०        | गौदानम्          |
| ति   | ७  | १७ | १४ | १९ | रक्तवस्त्रदानम्  | ज०    | ७  | १० | १५ | ६        | गौचमपात्रदानम्   |
| ० अ  | ०  | ०  | ०  | ७  | यवनाम्रदानम्     | अ०    | १२ | २२ | २६ | १८       | दृष्यदानम्       |
| म    | २८ | २६ | १८ | २२ | सुवर्णदानम्      | ध०    | ०  | १४ | २० | १९       | हरितवस्त्रदानम्  |
| ० पु | १७ | १८ | १४ | १६ | गौरवस्त्रदानम्   | श०    | ७  | १३ | १६ | १८       | घृतप्रस्थदानम्   |
| उ    | ७  | २५ | १८ | २० | तण्डुलदानम्      | पू०   | ०  | १८ | २० | २४       | काञ्चनदानम्      |
| ह    | १५ | १६ | १४ | १३ | दधिपात्रदानम्    | उ०    | ७  | १८ | २० | २४       | दुग्धपात्रदानम्  |
| चि   | ११ | २८ | २१ | १४ | माषपात्रदानम्    | रे०   | ०  | १८ | २० | २४       | घृतगुडदानम्      |

आग्निन्यादिनक्षत्रेषु रोगोऽपि निवृत्तः

अथान्यादिनक्षत्रेषु रोगोत्पत्तौ रोगमुक्तदिनानि यामक्रमेण स्यात् ॥



५१२३४५६७८९१०१११२

नन्म भाच्च चतुर्गुणपतिधिवारसमन्वितं। ग्रहसंख्याहरेद्भागं  
शेषंवारदशाक्रमात्॥ रविणाशोकसन्नापशशकिक्षौमलाभदः॥  
भूमिपुत्रेचनिधनं बुधेषुज्ञाप्रदं सुरवं॥ जीवेलाभः शुभं भुक्ते  
सूर्यपुत्रे महाभयम् राहुणाघातपातश्च केतोर्मृत्युर्न संशयः॥

जन्मतीनर्पचमशीरद्वैतेन वमेगगातेपीठसाधरुकाहृहृया  
लीजे प्राथवाहुपावकलीजे॥ दशमेचौधो हसरोहत्  
रुहविधिबैधेचंदकेवास॥ माधेचन्द्रद्वयवधाग्रयह  
दयापारतमहसुखपावंधं पाठकरवरपीठउग्रसुह  
स्तैयूगयमनोशुभार॥

१४६५  
वाणांशो नितवृन्द्याकसूर्या १२ रुतावेद ४ युता मुनीन्द्रः॥ मवा  
२ प्रोषिकथितः पुराणीश्चेन्नदितः स प्रसराधिमासः॥  
एकराशिस्थिते सूर्ये दर्शद्वयं यदा भवेत् मलमासः स विज्ञेया  
शुभः सर्वकर्मसु॥ ॥ अमावास्याद्वयं यत्र रविसंक्रान्तिवर्ति  
तः॥ मलमासः स विज्ञेयमुत्तरस्तथा विधः॥ ॥ अद्देगते द्वय  
साद्विपश्चपक्षे दिनत्रये॥ दिवसस्याष्टमे भागे पतन्त्येकोऽधि  
मासक इति मलिमुच्यते॥

भोमादित्यगतं हरं बुधशुक्रसमीपके॥ आगतो गुरुशुक्राभ्यां शनि राह  
न दृश्यते॥



आश्विन शुक्ल नवमी स्वायम्भुव १  
 कार्तिक शुक्ल द्वादशी स्वरोचिष २  
 रक्तवतीया — श्रौतम ३  
 उपर शुक्ल वृतीया — तामस ४  
 प्राषाढ शुक्ल दशमी — रैवत ५ फाल्गुन अमावास्या  
 माघ शुक्ल सप्तमी — चाक्षव ६ पौष शुक्लैकादशी  
 श्रावण शुक्ल दशमी — वैवस्वत ७ आषाढ शुक्ल दशमी  
 आषाढ पूर्णिमा — सूर्यमावर्णि ८ माघ शुक्ल सप्तमी  
 फाल्गुन कृष्णमावास्या दससावर्णि ९ श्रावणमावासी  
 पौष शुक्लैकादशी — ब्रह्मसावर्णि १० आषाढ पौर्णिमा  
 कार्तिक पौर्णिमा — धर्मसावर्णि ११  
 फाल्गुन पौर्णिमा — रुद्रसावर्णि १२  
 वैत्र पौर्णिमा — रौच्य १३  
 ज्येष्ठी पौर्णिमा — भौत्य १४

सन्निभचन्द्ररागा निरूपणं हरे नारायण पद्मपुरा  
 णोपनिषत्तु ध्या

नक्षत्रेयत्र भागं स्यात्तदा वृत्तिविकेंद्रिकं। सूर्येन  
 भुक्त्वा सौराणामितुभो मेव हस्तेन। राहोकेतोश्च  
 निर्दिष्टावदनादभ्युपगम्य सितिकश्यपः

१ श्रीगुरवे नमः॥ ॥ अथ मङ्गलाद्यष्टयोगिनीनां दशा फला  
 नि॥ ॥ इत्यां पराणां सुखभादिमर्त्तमान्योनरेण स्थचकीर्ति  
 युक्तः॥ अथ द्विदत्तशुक्लत्रयुक्तचेन्मङ्गलामङ्गलमध्याग  
 स्थान्॥ १॥ ॥ मं. पि॥ प्रतापानलेनेव हरी भवन्ति प्रतिस्पृहोरा  
 जमान्यत्वमत्र॥ धनप्राप्तिरभ्यान्तराणां सुखं स्याद्यदा मङ्गलाम  
 ध्यागापि कुलाचेत्॥ २॥ ॥ मं. धं॥ व्यापारतो वहुसुखं धनवृद्धि  
 तश्च मित्रादिवस्वधनधान्यगृहादिलाभम्॥ शत्रोः पराजय इ  
 ह स्वजनैः प्रतियुधधन्यादशा भवन्ति मङ्गलपाकमधो॥ ३॥ ॥  
 मं. भा॥ शरीरनेत्रामयकश्चरोगोनानाविकारो सहजापप  
 श्च॥ सर्वाङ्गपीडा नरुणी वियोगश्च द्वाभरी मङ्गलगामिनी  
 स्थान्॥ ४॥ ॥ मं. भ॥ शरीरसौख्यमृणमोचनश्च धनाग



जः कीर्तिविशेषवृद्धिः॥देशास्मधीकारनृपमान्यताच॥  
दशामङ्गलपाकमध्या॥५॥ ॥मं०उ०॥चित्तप्रमंभ्रमणतः  
यथिचोरकसंशोकोभयंस्वजनवर्गविवादमुग्रं॥दारादि  
पुत्रकलहोभिजदेहपीडाउल्कायदाभवतिमंगलपाक  
मध्या॥६॥ ॥मं०सि०॥व्यापारसिद्धिर्दुर्नधान्यालाभोमाना  
र्थभोगोयुवतीविलासः॥सन्तानसौख्यंरिपुहानिस्वचेति  
द्विकामङ्गलपाकमध्या॥७॥ ॥मं०सं०॥धनहनिकलिचे  
रजनाद्भवेच्चरणानेत्रशिरःपरिपीडनम्॥सुतकलत्रवि  
योगभयंभवेद्यदिचमंगलसंकटापाकगे॥८॥ ॥उ०  
निमङ्गलाज्जदेशाफलानि॥ ॥ ॥अथपिङ्गला

देशाफलानि॥शरीरेमुखंवाधिवैपत्यनाशंधनेवाह  
भवेद्वृद्धिताच॥गृहस्थलावसःप्रवासाभिलाषंय  
पिङ्गलापिङ्गलापकमध्या॥९॥ ॥पिं०धं०॥शत्रोर्विज  
दनकरमृणमोक्षकत्री॥राजप्रसादफलदाधनधान्यस  
त्री॥पुत्रापिकत्री॥निजगेहदात्रीधन्यादशावेन्ननुपिङ्गला  
यां॥१०॥ ॥पिं०भ्रा०॥शोकोदयंविकलताविविधात्रिकत्री  
देशान्तरेफलवियोगकरीप्रणर्ति॥हानिध्रवंसुतकल  
त्रजनेर्वियोगंभवेद्भ्रामरीभवतिपिङ्गलपाकमध्या॥  
११॥ ॥पिं०भ०॥मित्रादिसौख्यमणिमोक्तिकलाभदा  
सोभार्यामुतादिधनदाधनधान्यसत्री॥देशाधिका



रपद्वीननुप्रदतीयं चेद्रदिकाभवतिपि कुल  
 कमध्ये॥४॥ ॥पिं.उ॥ सदाविग्रहोवाहपुद्गल  
 ध्व.प्रतिस्पृष्टयासाधनेतत्परःसः॥धनार्तिश्रवस्त्रा  
 दिकानां वियोगोयदाचौत्तिकापि कुलापाकमध्ये॥५॥  
 ॥॥पिं.सि॥ चौराद्वनंनश्यतिगुप्तदुःखंहा निर्भयं पु  
 त्रकलत्रभेदं॥ज्वरोदयंसंधिशरीरपीडातमोक्षिपा  
 पिंगलपाकमध्ये॥७॥ ॥पिं.सि॥ सौभाग्यसिद्धि  
 विजयोरिपूरां देवार्चनंवाह्यपूजनञ्च॥मित्रा  
 दि सौख्यं धनधर्मलाभं सिद्धादशापिं गलपाक  
 मध्ये॥६॥ ॥पिं.मं॥ तुरगभुवनदाता प्रचपु

॥दि सौख्यं नरपतिकुलमानं सर्वदा धर्मवृद्धिः॥भव  
 तनुनरोगाः पुष्टिनास्था दूरीरे सकल सुखसमृद्धिं  
 कुलापि कुलायां॥८॥ ॥॥इतिपि कुलात्रदशा  
 फलानि॥ ॥अथधन्यान्त्रदशाफलानि॥ ॥मेधा  
 चमानमहिमासमतास्तुकीये विशामतिष्ठनकलत्र  
 सुखानिसम्पत्॥शत्रोर्जयोभवन्निचात्रमहत्सुखं हि ध  
 न्यायदाभवतिमध्यगतासुपाके॥९॥ ॥धं.भ्रा॥अ  
 लसतिमिरतन्द्रावाद्युक्तंशरीरेसमरकुलद्विजानां  
 द्वेषां विग्रहञ्च॥पुवतिजनविवाहं मानसंमानभंगं  
 यदिचभवतिधन्यामध्यगाभ्रामरीचेत्॥१०॥ ॥  
 धं.भ॥ अतुलविमलकीर्तिर्दयवृद्धिर्नरेभ्यः स्वज



नसुतकलत्रेभ्यः सदासौख्यमत्र। कथिनरिपुद्विलासो गुप्त  
 रत्नादिदृष्टिं यदि भवति च भद्रा मध्यगा धन्यका चेत् ॥ १  
 ध. ३॥ अथ कलह विपत्तिर्वादवेकल्यता च रिपु वि  
 धविकारैर्विग्रहे च धुभिश्च ॥ नृपतिश्च शिरपीडा च  
 शिरपीडा च वक्राद्यदि भवति च धन्या मध्यगा चोत्कि  
 का च ॥ ४॥ ॥ धं. सि. ॥ नृपतिमान विराजित विग्रहं ह  
 तरिपुं तुरगार्थयुतः सदा ॥ सुखकलत्रसुखं ननु सि  
 धिका प्रकुरुते यदि धन्यदशा गता ॥ ५॥ ॥ धं. सं. ॥  
 कलत्रकलंकमला वियोगं शत्रु प्रकोपं च पचोरभी  
 ति ॥ वातारोगं व्रण विरुलं च तमोधिपा धन्यद

गता चेत् ॥ ६॥ ॥ धं. मं. ॥ भूपाज्जयं क्षितिकर  
 चित्रभोगं प्रौढप्रताप निहेता रिगाणं सभूच्या  
 या श्वलाभ युतमत्र च तीर्थलाभ मज्जाधिपाय  
 दि च धन्यदशा प्रपन्ना ॥ ७॥ ॥ धं. पिं. ॥ सदा  
 शत्रुनाशः स्वगोत्रे प्रसिद्धा महद्व्यालाभो विवादे  
 जयश्च स्वदारादि सौख्यं फलैः स्वार्थसिद्धि भविष्य  
 न्यगापि गलाचे त्रदानी ॥ ८॥ ॥ इति धन्या त्रदं  
 शाफलानि ॥ ॥ अथ भ्रामर्य त्रदं शाफलानि ॥  
 विकलकुट्टि धनार्त्तिकरी सहस्रमरदुस्सरदुर्गति  
 वेशनं। उरगवाहनहानि कदापदं प्रभवति स्वद



शायदिश्रामरी॥१॥ ॥ ध्रा.भ.॥ भूपालतो बहु सुखं च  
हृत्पतिष्ठा भाग्योदयं स्वजनपुत्रकलत्रलाभं॥ भू  
दिलाभमनुलं कुरुते च भद्रा भ्रामी दशागतवती नृप  
दुमाच्यं॥२॥ ॥ ध्रा.उ.॥ वातामयं श्लेषाक्षिरोद्युथां च  
कथादिकष्टं कुमतिं भयं च॥ रिपूदयं कीर्तिविनाशक  
त्री भ्रामी दशामध्यगतोत्तिकाच॥३॥ ॥ ध्रा.सि.॥ उग्रं  
विवाहं स्वमतेः प्रकाशं माकुल्यवस्त्राभराणादिलाभम्॥  
पुत्राविशेषं नृपमाच्यताच भ्रामी दशामध्यगताच सि  
द्धाः॥४॥ ॥ ध्रा.सं.॥ तनौ दुःखदराजपक्षादिभीतिः सु  
हृद्दुःखकष्टं गृहे नैव वासः॥ मतेर्विभ्रमं घातघाता

कंच यदा भ्रामरीपाकगा संटास्थाना॥५॥ ॥ ध्रा.मं  
जतविद्रुमहेमवराङ्गना सुखमहीपतिमाच्य सु  
नरं॥ विमलकीर्तिं सुते कुरुते कुजाधिपगते स्व  
भुमङ्गलिकाफलं॥६॥ ॥ ध्रा.पिं॥ निपुनमतिवि  
नीतं वेदशास्त्रादिवुद्धिं स्वजनधनसुखास्थं तीर्थग  
जापितायां निजसकलरिपुघ्नं मानिनं पिङ्गलाचं  
द्यदि भवति कदाचिद्भ्रामरीमध्यगाचेत्॥७॥ ॥  
ध्रा.धं॥ प्रतापानले भस्मिताशेषशत्रुः कलत्रात्मज  
ः श्रेष्ठसौख्यं विदुते॥ तथा हाटकादिप्रवालस्थल  
विंदशाथन्यका भ्रामरीमध्यगाचेत्॥८॥ ॥



शनिभ्रामर्यन्त्ररक्षाफलानि॥ ॥ अथ भद्रिकात्र  
 शाफलानि॥ प्रोठ प्रतापादि जितारिपक्षः क्षो  
 पतिः प्राप्तिमहाप्रतिष्ठा॥ प्रसन्नमूर्तिर्जुरुते धनाय  
 भद्रादृशा भद्रिकपाक मध्ये॥ १॥ ॥ भ. उ॥ द दुक  
 र्णमुखरोगपीडितं वा जिवाहनविनाशदुःखितां॥  
 वक्रिचौरनृपशत्रुपीडितं भद्रिका भवति चोत्कि  
 कान्विता॥ २॥ ॥ भ. सि॥ स्वधर्मकार्येषु सदा म  
 तिश्च भवेच्च वृद्धिर्द्विजदेव भक्तौ॥ अर्थमर्थ  
 विभुता समेत चेत्तिद्रिका भद्रिकपाक मध्ये॥ ३॥ ॥  
 भ. सं॥ ज्यरवन विकारं गु प्रदुःखं विपत्तिरनिल

म

यविष्ठादेर्वाहसुद्धेर्विनाशः॥ निजकुलपरिभ्रंशं के  
 पीडावनाहं यदि भवति च भद्रामध्यगासंकटात्ते  
 ॥ ४॥ ॥ भ. मं॥ धन्यासुरात्मनि जवंशसुखानिपुष्टिं  
 लीलाविलासपुरपटनतां च सिद्धे॥ लोके सर्वैरकुरुते  
 चमहाप्रतिष्ठा भद्रादृशागतवता किल मङ्गला च॥ ५॥  
 ॥ भ. पिं॥ सुहृद्वनंतु धनं कलिनाशनं विमलवु  
 द्धिविलाससुखानि च॥ अमलकीर्तिगणो किल शि  
 गला सुत सुखं कुरुते बुधगा यदा॥ ६॥ ॥ भ. धं  
 ॥ कलत्रसौख्यं महिषी सुधेनुर्दद्यागमं शत्रुजय



विवादे। नृपेन्द्रमान्यं कुरुते च धन्या भद्रादशायां  
दिचेत्युतिष्ठा ॥ ७ ॥ ॥ भ. भ्रा. ॥ कलत्रपुत्रादि  
गडुःखं महद्भयं भूय कुरुते च निष्ठं ॥ विदोषरा  
चशरीरकष्टं चेद्भामरी भद्रिकपाकगाः स्यात् ॥ ८  
॥ ॥ इति भद्रिका त्रदशाफलानि ॥ ॥ ॥ अ  
थोल्का त्रदशाफलानि ॥ ॥ देहेषी डा जायते वा  
नपितैराशोभीतिर्वन्धनं शत्रुभीतिः ॥ स्त्रीपुत्रा  
देः स्याद्वियोगो विपत्तिश्चोल्कापाके चेद्भवेदुल्कि  
का चेत् ॥ ९ ॥ ॥ उ. सि. ॥ क्रयो विक्रयो द्वावला

सुवर्णं तथावस्त्रतो धान्यतश्चाश्वलाभः ॥ पु  
थताराजमान्यत्वमत्र भवेदुल्कि कापाकगा  
साद्विका चेत् ॥ १० ॥ ॥ उ. सं. ॥ शिरःकर्णनासाक्षिक  
घ्राविकारो भवेत्क्लेशकष्टं मृपाचौरतोपि ॥ भयं वं  
धनं देहपीडां विरोगं भवेदुल्कि का मध्यगा संकय  
चेत् ॥ ११ ॥ ॥ उ. सं. ॥ रोगादिना शंरिपुकष्टनाशं  
लाभो भवेद्देशपतिः सकाशात् ॥ पौराणनास्तस्य  
महामतिस्तु म्रेन्मकुला चोल्कि कापाकमध्यो ॥ १२ ॥  
॥ ॥ उ. पिं. ॥ वराकुना हासविनोदसौख्यवस्त्रा



दिताभंधनधानसौख्यं॥पुण्यमतिःस्याद्विजहे  
तीर्थेचेदुल्लिकापाकगपिदुःखात्स्यात्॥५॥॥३॥  
सुखोदयमित्रसमागमश्चरिपुष्टयंदेवानराधिप  
त्वं॥वदुःप्रतापेनचसर्वभेदीचेदुल्लिकापाकगा  
धन्यकास्यात्॥६॥॥३॥॥३॥॥देशत्यागेचाधिदुःखं  
वियोगंवध्वद्वेगंतुष्टिनाशंधनार्ण॥तेजोच्यंशंचा  
ग्निचौरादिभीतिमुक्तापाकेजायतेभ्रामरीचेत्  
॥७॥॥३॥॥३॥॥सुवर्गरूप्यादिकलाभपूर्णावा  
णिज्यतोतीवधनागमःस्यात्॥चतुष्पदात्प्राप्ति

होल्कटायांचेद्वद्विकास्वीयगृहस्थलक्षिः॥८॥  
मुक्तात्रदशाफलानि॥॥अथसिद्धान्तद  
शाफलानि॥॥द्वयागमोमनसिचिन्तितकार्यसि  
द्धिर्मेहेविकारमुखमङ्गलनिश्चलाश्च॥रामासुतादि  
सुखमत्रभवेद्विभुत्वंचेत्सिद्धिकास्वीयदशागतास्या  
त्॥९॥॥सि.सं॥॥आलस्यतद्राकटिगुरुपीडापामा  
विकारोदरवातवेगः॥राजश्चभीतिर्जलवद्विपातंसि  
द्धादशायांयदिसङ्कटास्यात्॥१॥॥सि.सं॥॥मुक्ताप्र  
वालमणिविदुमलाभकारीनानाविधंधनचयंकु  
रुतेविभुत्वं॥दिवाङ्गनावदनपक्वजषद्यदत्तं



चेन्मङ्गलाभवतिसिद्धिकपाकमध्यो॥३॥ ॥सि. ॥  
 श्रीदेवकीलंसशिरंशरीरंहेमादिवस्त्रेपरिभू  
 तञ्च॥कामाधिकंकामिनिसंगरज्जुसिद्धादश  
 यदिपिङ्गलास्यात्॥४॥ ॥सि. धं॥गृहेद्वारवाजी  
 रणेरज्जराजीविचित्राभराणांसुदेशस्यालाभः॥कु  
 दुम्भाधिकोमित्रपक्षादिलाभोयद्यसिद्धिकाम  
 ध्यागाधन्यकाचेत्॥५॥ ॥सि. भ्रा॥विदेशभ्रमं  
 हानियुद्धेगताचकलत्रंचपीडासुखंवर्जितव  
 र्गंषाधिवृद्धिरिपूर्णाभयश्चयदाभामरीसि  
 द्धिकापाकमध्यो॥६॥ ॥सि. भ्रा॥सकलतापक

तिश्चसुखोदयंविमलकीर्त्तिमनंविपुलधनं  
 विपुलगेहसुखंनृपमान्यताबुधदशाफल  
 सिद्धिगताभवेत्॥७॥ ॥सि. उ॥सुखादि  
 नाशतनुरोगदुःखंनृपादिभीतिकलहंकुमि  
 त्रं॥मनोवियोगंभ्रमणंविशेषंचेदुल्किकाः  
 सिद्धिगपाकगास्यात्॥८॥ ॥इतिसिद्धान्त  
 दशाफलानि॥ ॥अथसंकटान्नद  
 शाफलानि॥ ॥देहादिकष्टंमरणेवमुल्य  
 रोगाधिकाराःकफवातपित्तैः॥त्रिदोषदोषं  
 रिपुवर्गभीतिंचेतंसंकटास्वीयदशांगतास्या



॥१॥ ॥ सं. मं. ॥ श्रीं श्रीं सुतादिगुरु तो धन धान्यद  
धि. पुंसश्च सोऽयमधिकं द्विज गोरवापि ॥ सुजा  
पण्डित करे लिखने मतिः स्याच्चै न्मङ्गला संक  
गामिनी च ॥ २॥ ॥ सं. पिं. ॥ प्रवाल मुक्ता फल व  
स्त्रलाभं कथानकात्सर्वजने सुमेत्री ॥ रथाश्च  
लाभं खलु सेवकानां चेत्पिङ्गला संकटपाकम  
धो ॥ ३॥ ॥ सं. धं. ॥ मेवादि कान्देव गुरु द्विजा  
नां दाने मतिर्नीर्थं जपादि होमे ॥ गद्याद्यमस्मा  
द्धनलक्ष्मि मत्र चेत्संकटायां भवती रुधन्या ॥ ४॥  
॥ सं. भ्रा. ॥ देशान्तरं पर्वतमस्तकेषु राज्या

पीडा धनहानिरत्र ॥ वातादिरोगं रिपुभीति कष्टं  
मरीराहुदृशां प्रपन्ना ॥ ५॥ ॥ सं. भ. ॥ अतु  
कार्त्तिवलाधिकवर्द्धने रिपुगणास्तत्र संहति  
रत्र वै ॥ सकलतापहृतिश्च सुखोदयं यदि च संके  
यपाकगभद्रिका ॥ ६॥ ॥ सं. उ. ॥ महारोग रु  
न्नेत्रनासाक्षिकर्णेतथापादमूले कटौ गुह्यका  
दौ ॥ धने नाशकृद्वाहने नाशकत्री भवेत्संकट  
पाकगचोत्तिका चेत् ॥ ७॥ ॥ सं. सि. ॥ भवेन्म  
होजान्तरपकार्यकतभिर्ज्ञविधौ शास्त्रकलासु



दक्षः॥ अनेकमेव प्रियदर्शनं चेत्तिष्ठादशा सं  
टपाकगास्थान्॥७॥ ॥

निधिवारश्च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितं॥ नवभि  
श्चहरेद्रागं शेषं वाहनमुच्यते॥ गर्दभस्तुरगोह  
स्ति मेघजस्तुकसिंहका॥ काकहंसमयूराश्च इ  
त्येतेनववाहनाः॥

उद्भोदकश्च मत्स्यश्च मासश्च नराणो नदी॥ मेधुनं क्षौरप  
श्चाश्ववर्जयेज्जन्मकेदिने॥ उद्भोदको भवेत्श्वानो मत्स्य  
सर्पो भिजायते॥ मासगृध्रो नदी मृत्यु मेधुने शूकरो भ  
वेत्॥ क्षौरे ल्यायु मृति पथितस्मादेतद्विवर्जयेदिति गणाक

यज्ञानं॥ वन्दे सदा गणपतिं निजकामसिद्धेवाणी सदा  
लशास्त्रविचारदात्री॥ श्रीमद्गुरुं निखिलतत्त्वविको  
तुंशल्यंगुरोः प्रमुखवक्त्रमध्याबुवेहम्॥ पूर्वा  
दिनः क्रमश एव च वर्तुलेन स्वस्वाक्षरात्फलमिदं निज  
कोष्ठकेषु॥ तेषां च मध्यमवसातमिति वक्त्रनिहस्तप्र  
माणमपि कोष्ठफलंगृह्णन्ति॥ २॥ नरास्थिपूर्वे च रेरा  
स्थिवह्नौ सर्पास्थि याम्ये च तुरङ्गमास्थि॥ गजास्थि मा  
हिषा विडालशाखां मृगास्थि मूषास्थि विदिक्षादिक्षा  
३॥ नरास्थि यत्रास्ति नृणां मुहुर्मृतिरवरास्थि भीतिप्रद  
माह भोगिनां॥ तदुद्भवश्चास्थि भयं महद्भवेत्तुरङ्गमा







नमः श्रीगणेशाय ॥ राहुः क्षमाजदिवाकरे नुरविजैः संप  
 स्थितो लानगेः ॥ १॥ निलतस्कराग्निजभयं रोगा  
 नानाविधाः ॥ जीवः सोमसुतस्तथैव भृगुजोयात्रोदयस्थे  
 नृणां सायनाधनधान्यभोगसुखदापुण्यैः कृतैर्लभ्यते ॥ १  
 ॥ विप्रद्वयं शीखनिनादवीणा पुत्रा चितास्त्री विहङ्गास्त्वर्ष  
 रणा ॥ सखेखरोवाविधवाश्चलिङ्गि पक्षेन मासेन निवर्त  
 नं स्यात् ॥ २॥ इतिलग्नस्य ॥ १॥ कोशस्थाने नराणां मसुरगु  
 रुबुधैर्द्वर्मकर्मार्थलाभं बर्षं प्राप्नोति जीवो धनसुख  
 मतुलं शत्रुपक्षक्षयश्च ॥ मन्दोवन्ध्वं च दीर्घं मरणात्  
 थकुजः कोशहानिश्च भानुश्चन्द्रः कुर्यान्नरेन्द्रप्रियं ज  
 नसहितं राहुर्नृणां दयुक्तः ॥ ३॥ धृतेकवृषभो वीणान  
 र्त्तकी दीपको नृपः ॥ मासेन क्रतुना वापि षण्मासश्च

र्त्तनं ॥ ४॥ इति द्वितीयस्य ॥ २॥ भ्रातृस्थाने स्थितौ नुरक्षि  
 तं रविजो भानुना पस्थितो वैश्रुक् श्वन्दात्मजो वा सुर  
 रथवाशीतरश्मिश्च राहुः पुष्टिर्द्वर्मार्थलाभो नरवर  
 मने प्राप्य सर्वार्थसिद्धिं क्षितिं शत्रुसमस्तान् विचर  
 ति च यथा गोकुले गोपिवेशः ॥ ५॥ धौताम्बराचरजकीसु  
 रभिः सवत्सावेदधुनिर्नृपवरो हयनर्तकी च ॥ वामे ख  
 रो रसदिनैर्नयना विस्मये मासत्रये वकथिता गमनं  
 नराणां ॥ ६॥ इति तृतीयस्य ॥ वधुस्थानगतो ददाति विपुलां  
 लक्ष्मीं भृगोरात्मजो जीवशत्रुविनाशमिच्छति महालाभकुरो  
 त्तिन्दुजः ॥ हानिर्वन्धुगतः करोति रविजो वैदुष्यं चन्दुमा  
 राहुर्भूमिसुतौ तथो ह्यकिराणः कुर्वन्निन्दुः खमहत् ॥ ७॥ वा  
 मे मयूरवृषभं हयश्च पुत्रा चितास्त्री सुरभिः सवत्सा ॥ दिने  
 श्वविंशत्युमितैर्निवृत्तिर्नृपस्य याणां मपि दंति शत्रवः ॥ ८॥



कुर्यादर्थस्य सिद्धिं सुत भवनगतो वा कतिः शत्रुनाशं शुभं  
 तांशुपुत्रः सुरपति सदृशो युद्धकाले करोति ॥ सूर्याश्रुत  
 मोदिनकरतनयः सैंहिको नाद नो वा सर्वे ते पञ्चमस्थाः  
 धर्मयकराः पार्थिवश्चालने च ॥ ९० ॥ धेनुः शंखो वृषश्च  
 राजा पूर्णाद्यदो द्विजः ॥ षड्भिश्चदिवसैर्मामैश्चतुर्भिश्चान  
 वर्त्तनम् ॥ ९१ ॥ इति पंचमः सर्गः ॥ शत्रुस्थाने नराणां दिनकरत  
 नयो भूमिपुत्रोऽथ वार्कः शीतांशुर्द्वैतमन्त्री रजनिपति सुतः  
 सैंहिके योऽथ जीवः ॥ कुर्वन्त्यर्थादिलाभं नरपतिगमने पा  
 प्यसर्वार्थसिद्धिं जित्वा शत्रुन्समस्तान् विचरति च यथा  
 गोकुले गोपिवेशः ॥ ९२ ॥ गोकंठ्या नृपतिर्मेषो हरे भ्रा  
 तृद्विजस्तथा ॥ सप्तमैर्दिवसैर्मामैस्त्रिषड्भिश्च निवर्त्त  
 नी ॥ ९३ ॥ इति षष्ठः सर्गः ॥ ६ ॥ नाशः शुक्रदिवाकरा कृतनयो

स्तथा भूमिजः क्षिप्रं शत्रुवर्शनयाति प्रथिगास्थानस्थि  
 प्रमे ॥ सौम्ये लाभसमागमः सुरगुरुस्त्रादी निलाभं नृ  
 वन्दो भीष्टुस्खंददाति च धनं यात्रा सुखा मित्रगाः ॥  
 ॥ पूर्णकुम्भो द्विजः काको वेश्यास्त्री सुरभिर्नृपः ॥ पञ्च  
 त्रयोदशदिने पञ्चमासो निवर्त्तनं ॥ ९४ ॥ इति सप्तमः सर्गः ॥  
 आरोग्यश्चन्द्रपुत्रो जनयति भृगुजः सर्वकार्यार्थसिद्धिं जीवो  
 रक्षयशेषं सुतमिव जननीयात्रिकेनैधनस्थः ॥ चन्द्राक्षो  
 द्वौ तमो वा जनयति नियतं शत्रुपक्षस्य सिद्धिं भौमो वार्कमि  
 जो वा जनयति सततं तस्करेभ्यो भयञ्च ॥ ९५ ॥ पुत्रान्वितास्त्री  
 सुभगा कुमारी याम्यखरः पूर्णाघटश्च मार्गः ॥ कष्टेन सिद्धिः  
 समुपैति कार्यं दिनेश्च मासैः खलु पञ्चभिश्च ॥ ९६ ॥ इति  
 अष्टमः सर्गः ॥ ७ ॥ शुक्रेति सौरवर्गं नवमे बुधश्च जीवो जया



स्त्रीधनधाच्यलार्भ॥ चन्द्रार्कसौरासतमाः सभौमाः कुर्वः  
 नेकापुरुषस्य दोषान्॥ १७॥ संमुखेमहिषीगौश्च पूर्ण  
 भोद्विजोत्तमः॥ चतुर्दशदिने मीसैः घडिरेव निव  
 म्॥ १८॥ इति नवमस्या॥ १९॥ कर्मस्थाने स्थितो कः प्र  
 ः करभटाः पुष्टिदः शीतरश्मिर्जीवः सङ्ग्रामकाले भवति  
 च सुभदाः सर्वकार्यप्रदो ज्ञः॥ शुक्रः साम्राज्यलक्ष्मीवित  
 रतिचमहीनन्दनः कीर्तिरत्र राहुर्वैशत्रुवृद्धिर्जनयति स  
 तर्तदीर्घरोगं तथा किं॥ १९॥ दक्षेकाकमृगौ सस्तौ वामे वा  
 खरगोष्मतौ॥ त्रिभिर्दिने श्रमासैश्च पञ्चमासो निवर्तन  
 म्॥ २०॥ इति दशमस्या॥ २१॥ शशिवुधगुरुशुक्राश्चार्कराहु  
 किंभौमो व्रजति च नरनाथः क्षिप्रमेकादशस्थाः॥ हरति  
 चरिपुवर्गान् घृत्तिनून् प्रयाति विचरति मृगराजस्य

जानां॥ २१॥ पुत्रान्विता स्त्री गणित्वा मासं धेनुं च कर्त्तुं भ  
 दर्शनं च॥ षष्ठे नमासे नच वत्सरेण दिने श्रविंशत्य  
 श्रकार्यं॥ २२॥ इत्येकादशस्या॥ २३॥ रविमुतकजस्य  
 नाशोनराणां जनयति कुमुदेशो व्याधिपीडाक्षयश्च॥  
 पुरगुरुवुधशुक्राद्या दशस्थानराणां जनति नरसमूहे कर्त्तुं  
 तेनष्टवीर्यं॥ २३॥ पुत्रान्विता स्त्री विधवा नृपश्च रिक्तोद्यते  
 वेदनिनादवीणा॥ कृच्छ्रेण कार्यं समुपैतिसिद्धिर्वर्षेण  
 यात्रा विनिवर्तनं स्यात्॥ २४॥ इति द्वादशस्या॥ २५॥ ॥ इति  
 वादरायणी यात्रा समाप्तम्  
 लग्नचतुर्थी त्वरि शोधशेषं षडंशको क्रेमुहरे वयोज्यम्॥  
 संधिधर्नसंधिर्तृतीयसंधिरत्र द्वितृतीयभावौ॥ वे  
 दद्विपुत्तोरिपुपुत्रभावौ संधिर्त्रयं वाराणुगो कपुत्तः  
 रिपोश्च सूतः सुहृदश्च संधिः सर्वे सप्तधाश्च ससंधिभावः॥

का  
 अगिप्रसंधे अगिप्रसंधे अगिप्रसंधे अगिप्रसंधे  
 अगिप्रसंधे अगिप्रसंधे अगिप्रसंधे अगिप्रसंधे  
 अगिप्रसंधे अगिप्रसंधे अगिप्रसंधे अगिप्रसंधे



# सूर्यचक्रं

मस्तकं ३ पदवन्ध  
मुख ३ मिष्टान्नशुजन  
स्कन्ध २ गजस्कन्धगामी  
वाह २ चतुः  
पाणि २ तस्कर  
हृदि ५ श्वेत्त्र  
नाभि १ अत्यन्तधी  
गुह्ये १ पानदात्रक  
जानू २ पददण्डगामी  
पाद ६ स्वत्यागुः॥

# चन्द्रचक्रं

मुख ६ हानि  
पृष्ठ ६ सारु  
कन ६ नृपती  
गुह्य ३ राजमान्य  
पाद ३ स्नानशु  
क ३ सर्वसर्व

# होमचक्रं

मुख ३ नाग  
नेत्र ३ धनागम  
मूर्ध्नि ३ जयपाणि  
दक्षिणमूर्ध्नि ४ नागवाम  
क २ हिक्का  
हृदि ५ धनपाणि  
गुह्य ३ स्त्रीनग  
पाद ४ दण्डकन

मुख ५  
नेत्र ५ नाग  
क ५ सु  
हृदि ५ स्ना  
पाद ५ स्नान  
कन २ स्नाव

# जीवचक्रं

मोक्ष ४ नाग  
पृष्ठ ४ गजिरवित्  
स्कन्ध २ सञ्जी  
हृत् २ मृग  
क १ विह्वलि  
नेत्र ३ नृपवत्सुख  
गुह्य ५ प्रीतिसारु  
पाद ६ उतक

# शुक्रचक्रं

मुख ५  
नेत्र ५ सर्व  
क २ सुहाजन  
हृत् ४ सर्व  
हो १ सुसखक  
गुह्य ३ मनेन  
जानूनि २ मृग  
पादया ४ ४ नाग

# गनिचक्रं

वक्त्र १ मृग  
दक्ष कन ४ धनपाणि  
पादया ६ पुवास  
वाम कन ४ रुय  
उदन ५ सञ्जीपाणि  
मोक्ष ३ राजमान्य  
नेत्र २ प्रीतिसारु  
गुह्य २ पददण्डगामी

# गान्धर्वचक्रं

पादो ७ धनहानि  
दक्षगुह्य ५ सन्नाप  
मिनासि ३ शस्त्रभय  
हृदि २ इज्जिनप्रिय  
मुख १ इज्जिनसीहान  
वामगुह्य ५ मृग  
नालो १ सर्वनाग  
गुह्य ३ पादनाग

# केतुचक्रम्

नेत्र २ रोगशोक  
मुख ५ लाभ  
मोक्ष ३ राजपद  
दक्षगुह्य ४ यशद  
वामगुह्य ४ भयद  
नालो १ नाश  
गुह्य २ मृग  
पादो ६ धननाश



येवदन्तिखचरवधक्रमं नोगुरुक्रमविधौहगोचरे॥  
 धर्मिताजनायान्निहास्यमधिकीर्तिलाभूनेरिति ज्योतिशास्त्र

सूर्यस्य विहा चन्द्रस्य कुजस्य बुधस्य गुरोः

|    |    |
|----|----|
| ११ | ५  |
| ३  | ९  |
| १० | ४  |
| ६  | १२ |

मानवज्य

|    |    |
|----|----|
| ७  | २  |
| ९  | ५  |
| ६  | १२ |
| ११ | ४  |
| १० | ८  |
| ३  | ९  |

बुधवज्य

|    |    |
|----|----|
| ३  | १२ |
| ११ | ५  |
| ६  | ९  |

रवितज्य

|    |    |
|----|----|
| २  | ५  |
| ४  | ३  |
| ६  | ९  |
| ७  | १  |
| १० | ८  |
| ११ | १२ |

चन्द्रवज्य

|    |    |
|----|----|
| २  | १२ |
| ११ | ५  |
| ९  | १० |
| ५  | ४  |
| ७  | ६  |

सर्वगुरु  
धम

|   |    |
|---|----|
| २ | ७  |
| ३ | ९  |
| ४ | १० |
| ५ | ८  |
| ६ | ५  |
| ७ | ११ |
| ८ | ६  |
| ९ | ३  |

सर्वेश्वर  
वज्य

आणनिधनेषु नयस्यापापालगताधिपः सुरगु  
 चतुष्टयस्य॥ भुक्ताभुभानिविविधानिसुपुण्य  
 जीवेचवत्सरशते सुविभुक्तिरोगः॥१॥ एकांशकस्था  
 वश्रुक्तास्त्वेकहर्षगालगमुपागतावा॥ धर्मेशनिर्ज  
 नेनयस्य जन्मोत्पत्त्या नद्यैर्युगमायुरेति॥२॥ एकांशकस्था  
 बुधश्रुक्रमन्धर्मस्थितालग्नमुपागतावा॥ जातो नरः प्रव  
 जितः सवात्येयुगान्त्रमायुर्वहुशस्तु कर्त्ता॥३॥ मन्दाशका  
 रविजीवभौमाः कर्माश्रिताः कर्मपुतावलाद्याः॥ राशावशा  
 नेहिमगौक्लिने युगान्त्रमायुः श्रियमातनेति॥४॥ धर्मेश्व  
 रे धर्मगते च यस्य भौमाशकस्येहिमगौ च दृष्टे॥ पुनी  
 रोयमुक्तिरोगजातः शास्त्रादिकर्त्ता युगमायुरेति॥५॥



नन्दसर्वस्वासाहितागः ॥ द्वादशो नितानन्दस्वः ॥

आदित्य चन्द्रानि जोषः शौरिः पूज्यागुः के

शेरा ॥ विंश प्रजाणां करारुवाणोः सुरास्त्रिधा ॥

विंशस्वः ॥ अरोमीति शोकामया तद्विरोध सु

गवित्रानि भूमादिकं वा ॥ मनस्तापहानि च थ

ति चर्च राजमान्य मान्य सुख पुत्रलाभः ॥ कलि नर्चन

हतिरोगप्रहाराः सुखीमान्यकाहारकादिप्रलाभः ॥

॥ विष्णुवाग्यवुभीति विदेशो महासंपदो वाहना

देशकामो दशायाः फलं श्लोकपादैर्विचित्र्यं ॥ ॥

|    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| र  | क  | मं | उ  | श  | द  | रा | के | २० |
| ३० | ५० | २५ | ५६ | ३३ | ६३ | २० | २० | ३० |
| ३० | ५० | २५ | ५६ | ३३ | ६३ | २० | २० | ३० |
| ३० | ५० | २५ | ५६ | ३३ | ६३ | २० | २० | ३० |